लौहित्य साहित्य सेतु : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

दामो बूढ़ी

संजीव मण्डल

1

मैं स्कूल जा रही हूँ । घर से स्कूल की दूरी अधिक नहीं है तो कम भी नहीं है । मैं साइकिल पर स्कूल जाती हूँ। आज माँ से थोड़ी किचकिच हो गई है, मन उदास है । गर्मी बहुत है, धूप तेज है । साइकिल पर हूँ । ठंडी हवा का झोंका आया तो मानो नयी जान आ गई । दायी मुट्ठी हैंडिल से छोड़ दी और सिर ऊँचा करके पल भर के लिए आँखें मूँद ली। मैं हवा को महसूस करना चाहती हूँ।

स्कूल पहुँचने ही वाली हूँ कि वही दामो बूढ़ी दिखाई दी कुछ बड़बड़ाते हुए । वह उसी चिरपरिचित स्थान पर बैठी थी, जिसकी दायी तरफ थोड़ी दूरी पर अनंत खुड़ा (चाचा) की दुकान है। मुझे देखते ही बूढ़ी ने पूँछा-

"कहाँ जा रही हो लड़की ?"

मैं डर गई । यह पगली है । मेरे पीछे दौड़ न पड़े। फिर सोचा यह तो यों ही बकती रहती है। हर किसी से सवाल पूछती है। उसकी तरफ देखना मुझे अच्छा नहीं लगता। कितनी मैली रहती है। जब से देखा है उसी सफेद मेखला चादर में । सफेदी मटमैली हो गई है । यहाँ वहाँ भूरे चकत्तों से दाग पड़ गए हैं मेखला पर। बाल बिखरे, सन से सफेद। देखने पर दया भी आती है, उबकाई भी आती है और डर भी लगता है।

मैं साइकिल से आगे बढ़ जाती हूँ।

2

पता नहीं एक दिन में इतना सारा होमवर्क कैसे करूँगी । घर जाते ही बरतन धोओ, कपड़े धोओ, गाय-भैंस सम्भालो । तराली और मैं सबसे पहले निकली हैं क्लासरूम से और अब साइकिल-स्टेंड की ओर बढ़ रही हैं। तराली मुझसे पूछ रही है-

"सागरिका, तुमने कल टी.वी. पर सिनेमा देखा था ?"

"क्या ?"

"अरे यतीन बरा वाली- दाग। "

"काम करने से फुरसत मिले तब न देखू।"

"बहुत अच्छी सिनेमा थी।"

"अब जलाओ मत।"

हम दोनों ने स्टेंड से साइकिलें निकाली हैं। साइकिल पर चढ़ी और पैडिल मारना शुरू कर दिया।

-"ऐ सागरिका देख न दामो बूढ़ी को। क्या पका रही है ?"

मैंने दामो बूढ़ी की जगह की तरफ नजर फेरी । तीन ईंटों पर एक मिट्टी का बरतन रखकर नीचे सूखी घास, ताम्बुल के सूखे पत्ते और गोबर के सूखे उपलें जलाकर कुछ पका रही है । पता नहीं क्या पकाती है, क्या खाती है।

“क्यों रे तराली, कोई सगा सम्बंधी है नहीं क्या दामो बूढ़ी का ?”

“है क्यों नहीं, भरा-पूरा परिवार है । तीन-तीन लड़के हैं, बहुएँ हैं, पोता-पोती हैं।"

“तो फिर ऐसे सड़क पर रहती है, लड़के ले क्यों नहीं जाते घर ?”

"लड़के कहते हैं बूढ़ी पागल है । घर में रहती नहीं । भाग आती है।”

"झूठ बोलते हैं लड़के । कौन अपने घर नहीं रहना चाहेगा ? अपने बीबी-बच्चों से फुरसत मिले तभी न माँ का खयाल आए।”

तराली का घर आ गया था।

“बाय सागरिका, कल मिलते हैं, होमवर्क कर लेना।”

“बाय ।”

मैं सोचने लगी- टाइम तो निकालना ही पड़ेगा होमवर्क के लिए वरना चेतिया सर की डाँट कौन सुनेगा ? वे कितने डरावने लगते हैं !

3

“दामो बाइ तुम्हारे तोते तो बहुत सुंदर हैं । कितने के दिए हैं ?”

ऐसा कहते हुए वह व्यक्ति दामो बूढ़ी के पास से मुस्कराते हुए गुजर गया । दामो बूढ़ी कुछ मुट्ठी साग, एक पिंजरे में दो तोते लेकर बेचने को बैठी है। पास से गुजरते लोग उससे मजाक करते हुए निकल जाते हैं ।

“दामो बाइ, बाजार में बेचो, यहाँ कौन खरीदेगा ?”

मैं अनंत खुड़ा (चाचा) की दुकान से मेगी खरीद रही हूँ । सोच रही हूँ कैसी जिंदगी है दामो बूढ़ी की । अगर मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ । यह सोचते ही मैं अंदर से काँप गई ।

4

परीक्षा का रिजल्ट निकल गया है । मैं पास हुई, तराली भी पास हुई, हमारी सहेलियों में कोई फ़ेल नहीं हुआ । हमारे सेक्शन का भी कोई फ़ेल नहीं हुआ । अब हम दसवीं कक्षा में पहुँच गए हैं । साल शुरू ही हुआ है कि मेट्रिक का टेंशन, सिर चकरा जाता है।

मैं और तराली चेतिया सर के पास मेट्स और साइंस का ट्यूशन करने जा रही हैं ।

“तराली, बहुत दिन हुए, दामो बूढ़ी दिखती नहीं ।”

“मतलब तुझे नहीं पता ?”

“क्या ?”

“दामो बूढ़ी को बच्चा हुआ है ।”

मैं अचम्भित हो गई, चीख सी निकल गई -

“क्या ?”

"अरे हाँ रे, कुलेन के घर थी दामो बूढ़ी । सात-आठ महीने रही । बच्चा पैदा हुआ तो कुलेन की बीबी ने बच्चा रखकर दामो बूढ़ी को झोंटा पकड़कर निकाल दिया । राक्षसी है कुलेन की बीबी । खुद तो बाँझ है ।"

मैं सोचने लगी दामो बूढ़ी को बच्चा किससे हुआ । दिखती तो दामो बूढ़ी साठ के पार की थी । पर पहले तो कच्ची उम्र में शादियाँ हो जाती थी । बूढ़ी पैंतालीस के पार की नहीं होगी । वरना बच्चा कैसे होता ।

"दामो बूढ़ी को बच्चा हुआ कैसे ?"

"हरामी लोगों की कमी नहीं है । कुत्ते-बिल्लियों को नहीं छोड़ते, यह तो औरत है ।"

ऐसा कहकर तराली ने थूक दिया।

"अब दामो बूढ़ी कहाँ है ?"

"पड़ी होगी कहीं, वही जिंदगी जीते हुए ।"

5

अब मैं बी.ए. में पढ़ती हूँ । दामो बूढ़ी को वृद्धाश्रम वाले ले गए हैं । एक दिन हमारे इलाके का टी.वी. न्यूज रिपोर्टर हरप्रसाद कैमरा लेकर दामो बूढ़ी का इंटरव्यू लेने आ पहुँचा ।

"दामो बाइ तुम कब से ऐसे सड़कों पर हो ?"

"बेटा याद नहीं, बहुत साल हो गए ।"

"तुम्हारा अपना कोई नहीं है ?"

"बेटे हैं, बहुएँ हैं, पोता-पोती हैं ।"

"तुम उनके साथ क्यों नहीं रहती ?"

"वे मुझे अपने साथ नहीं रखते, कैसे रहूँ ?"

"तुम्हें घर जाने का मन नहीं करता ?"

दामो बूढ़ी ने कोई जबाव नहीं दिया । फीकी मुसकान मुसकरा पड़ी ।

वृद्धाश्रम में दामो बूढ़ी की कायापलट हो गई । अब वह साफ धुले हुए कपड़े पहनती है । सुंदर लगती है । वृद्धाश्रम में फिर एक दिन हरप्रसाद ने दामो बूढ़ी का इंटरव्यू लिया ।

"दामो बाइ, घर जाना चाहोगी ?"

"नहीं बेटा, मुझे यहीं अच्छा लगता है अपने हमउम्रों के बीच ।

संपर्क-सूत्र :
शोधार्थी, हिंदी विभाग
गौहाटी विश्वविद्यालय